(४) आर्य भारत के मूल निवासी थे

कुछ विद्वानों के विचार में सप्त सैंधव ही आर्यों का-आदि देश था। इस सिद्धान्त का समर्थन अविनाश चन्द्र दास ने किया था। गंगानाथ झा तथा डी० एस० त्रिवेदी ने भी भारत को ही आर्यों का आदि-देश माना है। इनके अनेक तर्कपूर्ण प्रमाण दिये गये हैं। उनका कथन है—

(क) अभी तक यह नहीं सिद्ध किया जा सका है कि आर्य लोग विदेशी थे। आर्य ग्रन्थों में उनके बाहर से आने का वर्णन नहीं है। इसके विपरीत वैदिक आर्यों ने सप्त सैंधव प्रदेश को ही अपना मूल-स्थान माना है तथा उनके गुणों का गान किया है। यदि ये बाहर से भी आते तो वे वेदों की रचना काल के इतने पहिले आये होंगे कि अपने आदि स्थान की स्मृति बिल्कुल खो चुके होंगे। इससे यह प्रमाणित है कि वेदों की रचना के बहुत पहले से वे भारत में रहते होंगे।

(ख) संस्कृत भाषा में, जिसमें वेद लिखे गये, सभी इंडोयोरोपियन भाषाओं के अधिक शब्द हैं, वे अपनी मूल-अवस्था में भारत के विभिन्न प्रान्तों की भाषाओं में अब भी पाये जाते हैं। अतः यह सम्भव नहीं हो सकता कि योरोप, जहाँ पर कम से कम शब्द हैं, वह आदि स्थान हो। इसके विपरीत यह उचित जान पड़ता है कि आर्य लोग भारत के आदि निवासी होंगे तथा यहाँ से विदेश गये होंगे।

(ग) ऋग्वेद के अध्ययन से भी यह प्रकट होता है कि उसकी रचना ऐसे प्रदेश में हुई होगी जहाँ पर ऋग्वेद में वर्णन की गई सभी भौगोलिक बातें पाई जायं। ऐसा प्रदेश पंजाब का ही था। अतः भारत को आर्यों का आदि देश मानना उचित है। कुछ लोगों का कहना है कि ऋग्वेद में हाथियों और बाघ का जिक्र नहीं है जब कि अनेक प्रान्तों में पशु ये पाये जाते हैं। यह तर्क बड़ा ही हास्यमय है। क्या सभी पशुओं का वर्णन करने के लिए वेदों के रचयिता बाध्य थे। उन्होंने इच्छानुसार जिन पशुओं को चाहा उनका वर्णन ऋग्वेद में किया है।

विद्वानों ने भारतीय मत का खंडन किया है। उनका कथन है कि सम्पूर्ण भारत में संस्कृत का प्रचार नहीं था। द्रविड़ भाषा बिलोचिस्तान में बोली जाती थी। इससे यह प्रमाणित होता है कि किसी समय द्रविड़ भारतवर्ष में फैले हुये थे। द्रविड़ काल के पहले संस्कृत का अस्तित्व प्रमाणित नहीं किया जा सकता है। यदि मोहन-जोदड़ों तथा हड़प्पा में प्रयोग की गई भाषा और संस्कृत में समानता प्रकट की जा सके तो भारत के आदि देश होने का मत अधिक शक्तिशाली गिना जा सकेगा।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से हम इसी परिणाम पर पहुँचते हैं कि आर्यों के मूल-निवास स्थान की समस्या अभी सुलझ नहीं पाई है। विरोधी मतों का संघर्ष पूर्ववत् बना हुआ है और जब तक कोई अकाट्य प्रमाण नहीं प्राप्त हो जाता तब तक शंका-समाधान की सम्भावना नहीं है। बहुत से विद्वानों की यह धारणा है कि यदि मोहनजोदड़ो की भाषा संस्कृत से मिलती-जुलती सिद्ध की जा सके तो भारतीय मत अकाट्य समझा जायेगा। क्योंकि मोहनजोदड़ो काल के पहले विश्व में कहीं आर्य जाति का अस्तित्व नहीं था अथवा यदि यह सिद्ध किया जा सके कि वेदों के रचना-काल का वह समय था जब कि संसार के अन्य भागों में आर्य नहीं थे, तो यह प्रमाणित हो जायेगा कि आर्य भारत के ही मूल निवासी थे।

ने इस मत का विरोध किया है। उनका कथन है कि पामीर एक इतना उजाड़ प्रदेश है कि वहाँ पर आर्यों का आदि स्थान होना बिल्कुल असम्भव सा जान पड़ता है। दूसरे पामीर में आर्य ग्रन्थों में वर्णन की गई सभी वस्तुयें पाई भी नहीं जाती हैं।

मेट्जे तथा हर्जफल्ड महोदय ने रूसी तुर्किस्तान को आर्यों का आदि देश बताया है। वहाँ पर पाये गये मृत्तिका पात्र इसका आधार हैं जो कि २८०० वर्ष पूर्व के हैं। डा० गाइल्स ने इसके विरोध में वही पुरानी बातें कही हैं। मेयर महोदय के अन्वेषण की बात की पुष्टि यह बात करती है कि आर्यों का आदि-देश पामीर के पास था।

(ख) आर्यों का आदि देश "किरगीजस्टेप्स" था

बैन्डेन्स्टीन महोदय का विचार है कि यूराल पर्वत के दक्षिण में किरगीज स्टेप्स आर्यों का आदि देश था। उनका विचार है कि आर्य ग्रन्थों में अनेक ऐसे पशुओं का वर्णन है जो योरोप में कहीं भी नहीं पाये जाते हैं। अतः योरोप आर्यों का आदि स्थान नहीं हो सकता है। दूसरी ओर एशिया के किरगीज स्टेप्स में वे सभी पशु मिलते हैं। अतः किरगीज स्टेप्स को ही आर्यों का आदि स्थान मानना चाहिए। यहीं से इण्डो-ईरानी पूर्व की ओर तथा पश्चिम की ओर गये होंगे।

मध्य एशिया सिद्धान्त की आलोचना

मध्य एशिया सिद्धान्त की भी विद्वानों ने तीव्र आलोचना की है। विद्वानों का कहना है कि मध्य एशिया में पानी का बड़ा अभाव है और भूमि उपजाऊ नहीं हैं। परन्तु आर्यों के आदि देश में जल का अभाव न था और भूमि उपजाऊ थी। दूसरे यह सम्भव कैसे हो सकता है कि आर्यों के आदि-स्थान छोड़ने के उपरान्त वहाँ पर एक भी आर्य नहीं रह गया। मध्य एशिया के वर्तमान निवासी अब आर्य नहीं जान पड़ते हैं। अतः इन दो कारणों से यह निष्कर्ष निकलता है कि आर्य लोग मध्य एशिया के आदि निवासी नहीं थे। डा० गाइल्स ने भी भौगोलिक आधार पर मध्य एशिया को आर्यों का आदि-देश नहीं माना है।

(३) आर्यों का आदि देश आर्कटिक प्रदेश था

भारतीय विद्वान श्री लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि आर्यों का आदि देश उत्तरी ध्रुव प्रदेश था। तिलक जी का कहना है कि वेदों में बहुत सी ऐसी बातें मिलती हैं जिनसे यह पता चलता है कि उत्तरी ध्रुव प्रदेश आर्यों का देश रहा होगा। उदाहरण के लिए इन लोगों को इस बात का ज्ञान था कि एक लम्बे दिन और एक लम्बी रात का वर्ष होता है और कई दिनों का प्रातःकाल होता है। यह सभी विशेषतायें उत्तरी ध्रुव प्रदेश या आर्कटिक प्रदेश में पाई जाती हैं। अतः उनके विचार में आर्कटिक प्रदेश को आर्यों का आदि देश माना जाना सर्वथा उचित है। उत्तरी ध्रुव छोड़ने का कारण बताते हुए तिलक महोदय का कथन है कि वेदों में कई स्थानों पर तुषारापात होने का वर्णन है। सम्भवतः इस तुषारापात के कारण ही आर्यों को आर्कटिक प्रदेश छोड़ना पड़ा होगा। परन्तु विद्वानों ने इस मत की तीव्र आलोचना की है।

अधिकांश विद्वान लोकमान्य तिलक जी के सिद्धान्त का समर्थन नहीं करते हैं। आर्यों के स्थान छोड़ने का समय निश्चित करते हुए तिलक लिखते हैं कि लगभग ८००० वर्ष ई० पूर्व उन्हें ध्रुव प्रदेश छोड़ना पड़ा था। ६००० वर्ष ई० पूर्व ये लोग मध्य एशिया में गये थे। इसके पश्चात् वहाँ से अन्य देशों को गये।